328hi20

20

मनोवैज्ञानिक विकार

प्रसन्नता अनुभव करना या मनोव्यथा में रोना, सामान्य क्रियायें हैं जो कभी न कभी हम सभी करते हैं। अधिकांश समय हम वही करते हैं जो परिस्थिति की मांग होती है, अर्थात् हम अपने संवेगों और व्यवहार को समाज में प्रचलित मापदंडों के अनुरूप नियंत्रित करते हैं। परंतु यदि व्यवहार बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के या संदर्भ के विरुद्ध होता है तो आप उसका मूल्यांकन कैसे करेंगे? यह सामान्य व्यवहार नहीं कहा जायेगा। दूसरे शब्दों में यह असामान्य व्यवहार कहा जायेगा। परंतु जीवन में किसी समय हममें से बहुत लोग अतार्किक रूप से या असामान्य व्यवहार करते हैं। क्या इसका मतलब यह है कि हम असामान्य हो गये हैं? संभवतः नहीं।

इसलिए असामान्य व्यवहार की क्या परिभाषा है, वे कौन से कारक हैं जो असामान्य व्यवहार पैदा करते हैं, ऐसे ही अनेक प्रश्न हमारे मन में उत्पन्न होते हैं। इस पाठ में ऐसे ही प्रश्नों के उत्तर और व्याख्या देने का प्रयास किया गया है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप इस योग्य होंगे :

- मनोवैज्ञानिक विकार की व्याख्या करने में।
- असामान्यता के प्रमुख प्रकार सूचीबद्ध और व्याख्या करने में।
- चिंता, कायिक रूप, मनःस्थिति, मनोविदलन जैसे मनोवैज्ञानिक विकारों के लक्षणों और विभिन्न प्रकारों का वर्णन करने में।

20.1 मनोवैज्ञानिक विकार

शब्द से ही स्पष्ट है कि कोई भी विकार जो व्यक्ति को सामाजिक क्षेत्र में अप्रभावी ढंग से कार्य के लिए प्रस्तुत करता है, मनोवैज्ञानिक विकार के रूप में जाना जाता है। मनोवैज्ञानिक विकारों को व्यवहारात्मक या मनोवैज्ञानिक लक्षणों की प्रतिकति के रूप में परिभाषित कर सकते हैं जो अत्यधिक पीड़ा पैदा करते हैं और कार्य करने की योग्यता को जीवन के एक या अनेक क्षेत्रों में दूषित कर देते हैं। महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि जो लक्षण व्यक्ति प्रदर्शित करता है निश्चित रूप से प्रचलित सामाजिक और सांस्कतिक मानदण्डों से गंभीर विचलन दर्शाते हैं। यहाँ पर सामाजिक और सांस्कतिक मानकों पर इसलिए बल दिया जा रहा है क्योंकि प्रत्येक संस्कति एक दूसरे से भिन्न होती है। एक संस्कति में कुछ कार्य उसका अनिवार्य भाग होते हैं जो दूसरी संस्कति में गंभीर व्यवधान हो सकते हैं। उदाहरण के लिए जनजातीय समाज में बिलकुल भिन्न मानदण्ड और संस्कति होती है। उनका रहन सहन और आदतें *नगरीय* संदर्भ में असामान्य मानी जायेंगी।

सामान्य से विलग व्यवहार को निश्चित करने के निम्नांकित सात मापदण्ड माने जाते हैं:

1. पीड़ा की अनुभूति : अपने जीवन में अत्यधिक पीड़ा और असुविधा अनुभव करना।
2. कुअनुकूलनशीलता : ऐसी व्यवहार या विचार प्रतिकति जो जीवन को अधिक दुष्कर बना देती है।
3. अतार्किकता : दूसरों के साथ तार्किक ढंग से बातचीत करने में असमर्थता
4. अनिश्चितता : पूर्णतः अनापेक्षित ढंग से कार्य करना
5. स्पष्टता और गहनता : दूसरों की अपेक्षा अधिक स्पष्ट और गहन रूप से संवेदना अनुभव करना।
6. प्रेक्षक की असुविधा : ऐसे ढंग से व्यवहार करना जो दूसरों के लिए उलझन पैदा करता है।
7. नैतिक और आदर्श मानकों का उल्लंघन : आदतन मानदण्डों को तोड़ना।

जैसा कि हमने पहले पढ़ा है कि असामान्यता और सामान्यता बड़े रूढ़ संप्रत्यय नहीं हैं। मन की अवस्थाओं की तरह, वे निरंतरता में रहते हैं और हममें से बहुत लोग जीवन के विभिन्न चरणों में उनका अनुभव करते हैं।

यह कहा जा सकता है कि असामान्यता मात्रा का विषय है जिसमें एक व्यक्ति का व्यवहार समाज के मान्य मापदण्डों के विपरीत अनुचित माना जाता है और जो व्यक्ति के सामाजिक कार्य करने में और समायोजन में समस्या पैदा करते हैं। आइये अब हम असामान्य व्यवहार के कारणों का अध्ययन करें।

20.2 असामान्य व्यवहार के कारण

बहुत से कारक हैं जो असामान्य व्यवहार के कारणों में योगदान करते हैं। उनमें से कुछ हैं:

क. जैविक कारक : व्यवहार को प्रभावित करने वाले जैविक कारणों के अंतर्गत अनुवांशिक कारक, गुणसूत्रों की अक्रिया, मस्तिष्क या अंतःस्रावी ग्रंथियों की अक्रिया जो असामान्य व्यवहार का कारण बनते हैं।

ख. मनोवैज्ञानिक कारक : असामान्य व्यवहार उत्पन्न करने वाले मनोवैज्ञानिक कारकों को पहचानना और मापना कठिन है क्योंकि वे अप्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं। इनका प्रभाव संदिग्ध रहता है किंतु यदि कोई बचपन में अपनाई गई प्रक्रियाओं का विश्लेषण करे जैसे अति–सुरक्षा, अतिभोज, असंगत दण्ड एवं पुरस्कार, ये कारक महत्वपूर्ण ढंग से कुअनुकूलनशील व्यवहार के विकास में योगदान करते हैं।

पाठगत प्रश्न 20.1

क. असामान्य व्यवहार के एक तत्व के रूप में अतार्किकता की व्याख्या कीजिए।

_____

_____

ख. असामान्य व्यवहार के क्या कारण हैं?

_____

_____

20.3 विकारों के प्रकार

अब तक इस पाठ में हमने असामान्य व्यवहार और उसके कारणों के बारे में पढ़ा है। आइये अब कुछ मनोवैज्ञानिक विकारों के बारे में विस्तार से पढ़ें। कुछ मुख्य मनोवैज्ञानिक विकार निम्नांकित हैं–

1. चिंता विकार
2. मनोदशा विकार
3. मनोविदलन विकार
4. द्रव्यसंबंधी विकार

20.3.1 चिंता विकार

हम में से सभी ने जीवन में चिंता का किसी न किसी रूप में अनुभव किया है। चाहे वह परीक्षाकाल के मध्य हो या साक्षात्कार के परिणाम की प्रतीक्षा हो, या प्रियजन की मत्यु के कारण हो, हम चिंता अनुभव करते हैं। हम इससे अपने ढंग से सुलझाने का प्रयास भी करते हैं, किंतु यदि समय के अंदर उचित ढंग से उसका समाधान नहीं होता तो वह विकार का रूप ले सकती है। चिंता विकार वे विकार हैं जो व्यक्ति के कार्य निष्पादन या सामाजिक कार्यों में अतिचिंता के कारण कमी ला देते हैं। चिंता विकार अनेक प्रकार के हो सकते हैं। जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

1. सामान्यीकत चिंता विकार
2. आतंकित विकार
3. (फोबिया) दुर्भीति
4. मनोग्रस्तात्मक – बाध्य विकार
5. कायजन्य चिंता
6. अभिधातोत्तर तनाव

आइये हम इन विकारों की विशेषताओं पर दष्टिपात करें :

1. **सामान्यीकत विकार :** यह अति सामान्य प्रकार का चिंता विकार है। अयथार्थ या अधिक चिंता इस विकार का मुख्य लक्षण है। आशंका, चक्कर आना, पसीना आना, कंपन, खिंचाव, एकाग्रता में कठिनाई आदि इस विकार के अनेक लक्षण हैं।

2. **आतंकित विकार :** बढ़ी हुई धड़कन, सांस लेने में कठिनाई और असहाय होने का भाव आदि स्पष्ट शरीर क्रियात्मक लक्षणों के साथ गहन चिंता आतंक विकार के मामले में देखे जाते हैं। चिंता के पहले और चिंता समाप्त होने के बाद शांति छा जाती है। इस विकार से पीड़ित व्यक्ति हमेशा चिंतित नहीं रह सकता।

3. **(फोबिया) दुर्भीतिः** दुर्भीति किसी वस्तु या परिस्थिति का अतार्किक भय है। हम सभी को किसी न किसी वस्तु से भय होता है किंतु जब यह भय एक ऐसे स्तर पर पहुँच जाता है यहाँ यह सामान्य क्रियाकलाप को बाधित कर देता है तब इसको दुर्भीति (फोबिया) कहते हैं। सामाजिक भय एक प्रकार की दुर्भीति मानी जाती है – जब कोई मंच पर भाषण देने या अजनबी से बात करने से डरे और कुछ विशिष्ट प्रकार के दुर्भीति जैसे चूहे या बिल्ली का डर।

4. **मनोग्रस्तात्मक - बाध्यविकार :** आग्रही विचार या इच्छायें जो किसी की चेतना में अनजाने ही प्रवेश कर जाते हैं और रोके नहीं जा पाते मनोग्रस्ति कहे जाते हैं। बाध्यता एक क्रिया है जिसे व्यक्ति करते रहने को बाध्य अनुभव करता है यह जानते

हुये भी कि वह अनावश्यक है। आग्रही चिंतन अनेक बार बाध्य क्रियाओं की ओर ले जाता है।

5. **कायजन्य चिंता :** कायजन्य चिंता शारीरिक समस्याओं की ओर संकेत करती है जिनका कोई आंगिक आधार नहीं होता, उदाहरण के लिए थकान, सिरदर्द अस्पष्ट शरीर पीड़ा आदि। इस रोग से पीड़ित व्यक्ति लक्षणों में ही ग्रसित रहते हैं।

पाठगत प्रश्न 20.2

1. चिंता विकार क्या है?

   ____

2. किन्हीं दो चिंता विकारों को सूचीबद्ध कीजिए।

   ____

20.3.2 मनोदशा विकार

मनोदशा विकार संवेगों के विकार हैं। संवेग की बढ़ी हुई तीव्रता और अवधि को तुरंत मनोवैज्ञानिक और चिकित्सकीय ध्यान की आवश्यकता है। इस विकार से पीड़ित व्यक्ति को सांवेगिक अशांत व्यक्ति कहते हैं। तीन प्रकार के मनोदशा विकार चरित्रांकित किये गये हैं। जैसे अवसादी विकार, द्विध्रुवीय विकार और अन्य विकार। मनोदशा विकार के अंतर्गत अत्यंत कष्टदायक लक्षण जैसे असंतोष और चिंता, भूख में परिवर्तन, निद्रा में विघ्न, मनोप्रेरक कार्य, अचानक वजन घटना, स्पष्ट सोचने में असमर्थता और मत्यु और आत्महत्या का विचार।

कुछ विचारों में जैविक कारक सम्मिलित होते हैं। भेषज चिकित्सा और जैव चिकित्सा इसके लिए अति प्रभावी पाई गई है।

20.3.3 द्रव्य संबंधी विकार

ऐसा पाया गया है कि जब लोग अधिक समय तक दर्द और तनाव से पीड़ित रहते हैं तो नशे जैसे शराब का सहारा लेते हैं। नशा, जैसे शराब, हमारे विचारों, कार्यों और क्रिया कलापों को नकारात्मक ढंग से प्रभावित करता है। ये नशीले पदार्थ लंबे समय तक लिये जाने के कारण अवधान, अभिप्रेरण और गत्यात्मक–समन्वय में गिरावट आ जाती है। नशीले पदार्थों के सेवन से लोग व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन में बहुत कुछ खोते हैं। द्रव्य संबंधी विकार केवल शराब के सेवन तक ही नहीं सीमित है किंतु यह पान मसाला, तम्बाकू, अफीम, मारीजुआना आदि से भी संबंधित हैं। इस विकार से पीड़ित व्यक्ति की सहायता के लिए निम्नांकित बातें आवश्यक हैं:

1. निर्विषीकरण
2. पीछे हटने के लक्षणों को सरल बनाने के लिए भेषज प्रयोग
3. प्रतिकूल अनुकूलन
4. सामाजिक सहायता
5. मनोचिकित्सा
6. पुनर्वास
7. रोकथाम और अनुसरण करना

20.3.4 मनोविदलन विकार

विशेषज्ञों का मानना है कि मनोविदलन सर्वाधिक विनाशक मानसिक विकार है। इसको विकारों के समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसको मूलभूत मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं जैसे अवधान, प्रत्यक्षीकरण, विचार, संवेग और व्यवहार के विखंडन द्वारा चित्रांकित किया जा सकता है। यह विखंडन गंभीर कुसमंजन की ओर ले जाता है। मनोविदलन का रोगी अपने आस–पास घटने वाली घटनाओं को सही ढंग से नहीं देख पाता और वे अक्सर वह सुनते और देखते हैं जो वहाँ नहीं होता। उनके सोचने का ढंग अस्त–व्यस्त और असंगठित होता है और वे दूसरों से सही ढंग से बातचीत करने में असफल रहते हैं।

मनोविदलन का चित्रांकन नीचे की सारिणी में दिया जा रहा है :

प्रकार	लक्षण
1. कैटाटोनिया	गत्यात्मक क्रिया के अस्वाभाविक ढंग, बोलने में व्यवधान, जैसे बात का दोहराना या कठोर आसन।
2. असंगठित	मौखिक असमानता, कमजोर विकसित विचार
3. व्यामोही	एक या अधिक विचारों के समूह में तल्लीन
4. अंतरन रहित	मतिभ्रम, असंगत
5. अवशिष्ट	विनिवर्तन, अभिप्रेरण का अभाव आदि

मनोविदलन के मूल लक्षण हैं विचारों की बाधा, प्रत्यक्षीकरण की बाधा, सांवेगिक अभिव्यक्ति में बाधा, बोलने में बाधा, सामाजिक विनिवर्तन, निम्न अभिप्रेरण।

20.3.5 व्यक्तित्व विकार

राममोहन एक कंपनी में लिपिक है। एक लिपिक के नाते दिये गये कार्य को करने योग्य है। किंतु जब कोई परिस्थिति सामने आती है और उसे निर्णय लेना होता है तो ऐसा करने

टिप्पणी

में वह समर्थ नहीं होता। उसका अपने वरिष्ठ लोगों के साथ अच्छा संबंध है क्योंकि वह अत्यंत विनम्र है, किंतु जब उसकी प्रोन्नति का प्रश्न आता है तो उस पद के लिए उसके अधिकारी उसकी क्षमता के बारे में आश्वस्त नहीं होते।

यह आश्रित व्यक्तित्व विकार का एक प्रचंड मामला है जहाँ व्यक्ति सदैव अपनी चिंता किये जाने की आवश्यकता दर्शाता है और कोई भी निर्णय लेने की क्षमता प्रदर्शित करने की क्षमता नहीं दर्शा पाता। व्यक्तित्व विकार का दूसरा रूप समाज विरोधी व्यक्तित्व विकार है जिसमें व्यक्ति अनुत्तरदायित्वपूर्ण तथा समाज को तोड़ने वाला व्यवहार जैसे संपत्ति नष्ट करना, चोरी करना, आदि करता है।

व्यक्तित्व विकार सोचने, अनुभव करने और व्यवहार करने की कुअनुकूलन शैली द्वारा चरित्रांकित किया जाता है जो व्यक्ति के सामान्य रूप से कार्य करने में बाधा डालता है।

पाठगत प्रश्न 20.3

1. द्रव्य संबंधी विकार ग्रस्त व्यक्ति की मदद में उठाये जाने वाले पगों की सूची बनाइये।

   _____

   _____

2. मनोविदलन विकार के कोई दो लक्षण बताइये।

   _____

   _____

आपने क्या सीखा

- कोई विकार जो व्यक्ति को समाज में प्रभावी ढंग से कार्य करने से रोकता है मनोवैज्ञानिक विकार माना जाता है।
- व्यवहार में प्रचलित सामाजिक एवं सांस्कतिक मानदंडों से गंभीर विचलन दिखाई पड़ना चाहिए।
- किसी व्यवहार को असामान्य निश्चित करने के लिए कुछ विचार योग्य बातें मापदण्ड के रूप में प्रयोग की जाती हैं – कुअनुकूलन, चिड़चिड़ापन, संदिग्ध स्पष्टता, प्रेक्षक की असुविधा और नैतिक मानदण्डों का उल्लंघन।

- असामान्य व्यवहार का कारण जैविक या मनोवैज्ञानिक हो सकता है।
- कुछ प्रमुख मनोवैज्ञानिक विकार, चिंता, मनोदशा, द्रव्य संबंधी, मनोविदलन आदि हैं।
- चिंता विकार व्यक्ति के कार्य संपादन को शिथिल कर देता है।
- चिंता विकार के विभिन्न प्रकार – कायजन्य चिंता, सामान्यीकत, आतंकित, दुर्भीति (फोबिया), मनोग्रस्तात्मक बाध्य विकार हैं।
- मनोविदलन अत्यंत कष्टकारक मनोवैज्ञानिक विकार है। मनोविदलन में मूल मनोवैज्ञानिक प्रक्रियायें खण्ड–खण्ड हो जाती हैं। मनोविदलन के विभिन्न प्रकार – कैटाटोनिया, असंगठित, व्यामोही, अंतर रहित, अवशिष्ट।